

सामाजशास्त्र के क्षेत्र में मानवशास्त्रियों का काफी
बोलबाला था।

उत्पुंके पठनाला विद्वानों की शक्ति में काफी
आरतीय लोग प्रभावित हुए और एक नए जड़िजीवी का
का उदय हुआ। उनमें से कुछ लोगों ने, अन्य विषयों को
अलावा, आरतीय शास्त्र, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों
में विशेष रुचि देलाई। वे लोग प्रायः अन्य जातियों के
जामाएत परिवार में जड़ि हुए थे। जो कुलीन कुल के सुपुत्र
थे। सामाजिक दृष्टि में जागतिक में उदय आरतीय
मंडलवादी तथा इंग्लैंड में जाकर अन्य विद्वानों के
तथा आपन देश में आरतीय समाजशास्त्र पर विचार प्रक
कत दिया। प्रायः में ही जड़िजीवी अंग्रेजी शास्त्र में
सामर्थक में और अंग्रेजी की मदद से आरतीय समाज में
सुधार तथा अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार प्रसार में बहुत काम
हुए। आला में विद्वानों को सुलभ ही भाषा में काम कर
सकता है -

↓
संस्कृतवादी

↓
सांस्कृतवादी

आरत में सामाजशास्त्र की वास्तविक शुरुआत
में लंडन विश्वविद्यालय में हुई। वह सन् 1907 में
अंग्रेजी शास्त्र के साथ एक संश्लिष्ट पाठ्यक्रम
वहा 1919 में सामाजिकशास्त्र के साथ समाजशास्त्र
संयुक्त विभाग स्थापित किया गया।
जा एक नवगीत सामाजशास्त्री के उदय प्रारंभ
वाक में उस विभाग से ही शुरुआत
होती थी। जड़ि जड़ि पर के लोग अंग्रेजी
की ही उनका प्रसिद्धता इंग्लैंड में
हुआ था।

गुरुवर्ष के बाद समाजशास्त्र की पढ़ाई 1931 में बी. ए. सी. सी. के प्रयास से लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रारंभ हुई।

राधाकमल गुरुजी इस विभाग के प्रथम अध्यापक के रूप में विश्वविद्यालय में इस विषय की स्थापना मानवशास्त्र के साथ 1938 में की गई जिसमें चिंतनबोध अध्यापक मानवशास्त्र इरावती भवन हुई। 1930 से लेकर 1950 के बीच मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र में कई विज्ञान-पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस प्रकार

समाजशास्त्र के विकास को धुलैरा चरण समाप्त हुआ। समाजशास्त्र अपने विकास के तीसरे चरण में 1951 में प्रवेश किया। इस चरण में बहुत सारे महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्र की पढ़ाई शुरू हुई। श्वेत शिक्षा जगत् में बड़ी तेजी से समाजशास्त्र एवं लोकप्रिय विषय के रूप में उभरने लगा। साथ ही 1952 में डॉ. एच. एच. को राजन्य की Indian Sociology Society की स्थापना हुई जिसके मासिक पत्र 'Sociological Bulletin' नामक शोध पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ।

काहल डी दिना बाद D. F. Pocock एवं Lewis Mumford जैसे प्रख्यात मानवशास्त्रियों ने 'Contributions to Sociology' नामक शोध-पत्रिका का प्रकाशन किया। काहल में प्रिन्सिपल मानवशास्त्र का भारतीय संदर्भों में प्रभाव धीरे-धीरे कमने लगा और भारतीय समाजशास्त्र का स्वल्प अमेरिकन होने लगा।

समाजशास्त्र जितना उदात्त अमेरिकी हो गया उतना दुनिया के किसी अन्य देश में नहीं हो सका। समाजशास्त्र के क्षेत्र में अमेरिकी विद्वानों का प्रभाव और अधिक अमेरिकन समाजशास्त्रियों पर जितना प्रभाव पड़ा उतना दिना प्रभाव नहीं पड़ा। इसके बाद अमेरिकी समाजशास्त्रियों ने भी प्रभाव डाला है। उनके द्वारा

1) भारत में अल्पसंख्यकों को अपने समुदायिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं को सुरक्षित रखने के लिए राष्ट्रीय आयोग, संसदीय समिति, राज्य सरकार, नगरपालिका, तालुका स्तर पर लोक सेवा आयोग आदि अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए समुचित कार्यवाही करने के लिए निर्देशित है।

ii) भारतीय विधानसभानों में अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए अल्पसंख्यक अधिकारों एवं सुधारों की चर्चा जारी रही और अल्पसंख्यकों की समस्याओं को सरकार के ध्यान में लाया गया है। अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए सरकार द्वारा अल्पसंख्यक विभाग, अल्पसंख्यक आयोग, अल्पसंख्यक विकास आयोग आदि अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए समुचित कार्यवाही करने के लिए निर्देशित है। अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए सरकार द्वारा अल्पसंख्यक विभाग, अल्पसंख्यक आयोग, अल्पसंख्यक विकास आयोग आदि अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए समुचित कार्यवाही करने के लिए निर्देशित है।

एवं - साहित्य संकायकर्ता के रूप में कार्य करते हैं। इनके
 कार्य को विचार के द्वारा समझने के लिए साहित्य संकाय
 द्वारा कभी कियत होती है जो भी है। यदि नए नए
 उपकरणों के साथ, विशेषकर साहित्य संकाय, साहित्य
 शास्त्र के अनुसंधान, साहित्य, साहित्य, साहित्य
 के साहित्य के विकास के लिए साहित्य संकाय के लिए
 साहित्य में साहित्य साहित्य साहित्य साहित्य साहित्य
 साहित्य संकाय है।